बी०ए० पार्ट-I हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए

प्राध्यापक- डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग, एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद।

'मलबे का मालिक' शीर्षक कहानी की समीक्षा

'मलबे का मालिक' शीर्षक कहानी स्व० मोहन राकेश की देश के विभाजन पर आधारित बहुचर्चित कहानी है। मोहन राकेश आधुनिक हिन्दी कहानी के सशक्त हस्ताक्षर थे। इन्होंने हिन्दी कथासाहित्य को नयी दृष्टि दी थी जिससे ~~आधु~~ आधुनिक कहानी न केवल भावनात्मक ही रही वरन् अधिक सामाजिक हो गयी। चूँकि मोहन राकेश देश विभाजन की त्रासद स्थिति के साक्षी रहे थे अतः उनकी कहानियों में तत्कालीन परिवेश सजीव हो उठा है।

कथानक - हॉकी का मैच देखने के बहाने लाहौर से मुसलमानों की कई टोलियां अमृतसर आयी थी। इनका मुख्य उद्देश्य अपने पुराने घरों, बाजारों और मुहल्लों को देखना था जो आज पराये हो गये थे। जैसी जिज्ञासा इनके भीतर अमृतसर के प्रति थी वैसी ही आत्मीयता लाहौर के प्रति अमृतसरवासियों की भी थी। दोनों ओर के लोग सब चाव से मिलकर एक दूसरे के बारे में अधिक से अधिक जान लेना चाह रहे थे। इन्हीं लोगों में गनी मियां भी आया था जो अमृतसर के बाजार बांसा का रहने वाला था। विभाजन के समय इसके बेटे चिरागद्दीन ने एक नया घर बनवाया था। वह अपने मुहल्ले का दर्जी था। चिरागदीन सबसे अपनापन था। शहर में दंगा शुरू ~~होने~~ होने के बाद भी वह अपने घर को छोड़कर जाने को तैयार नहीं हुआ। उसके पिता- गनी मियां कहते रहे किन्तु उसे अपने मुहल्लेवालों पर पूरा विश्वास था कि वे लोग उसकी रक्षा करेंगे।

उसी मुहल्ले के पहलवान रक्खा पर सबसे अधिक भरोसा था कि उसके रहते उसे कोई कुछ नहीं कर सकता। किन्तु हुआ ठीक उल्टा। रक्खा पहलवान की नजर उसके नये मकान पर थी। उसे हथियाने के चक्कर में उसने ~~उसके~~ चिराग के साथ ही उसके पूरे परिवार की हत्या कर दी। उस घर को लोगों ने लूट लिया और अन्त में किसी ने उसमें आग भी लगा दी। रक्खा रक्खा बना-बनाया मकान पर कब्जा करना चाहता था किन्तु आग लग जाने से उसकी आशा पर पानी फिर गया। गनी मियां उस गली में अपने नये घर को खोज रहा था। उसके इस काम में उसी मुहल्ले का एक युवक मनोरी बड़ी ही आत्मीयता के साथ उसकी मदद कर रहा था। गनी मियां की बांह पकड़ कर उसके जले हुए मकान के पास उसे पहुंचा दिया। गनी को उस मकान को देखकर विश्वास ही नहीं हुआ कि यही उसका मकान है। वहाँ पहुंचकर उसका अतीत साकार हो उठा और दुःख से वह बिलख-बिलख कर रोने लगा। उसी के बगल में सोया रक्खा पहलवान भी जाग गया जिसे देखकर गनी अपनी बाहें फैला कर उससे मिलने को आगे बढ़ा किन्तु पर रक्खे के ठंडे व्यवहार से वह सहम गया। वह रक्खा से बड़ी आत्मीयता से मिला और चिराग की मौत के बारे में पूछने लगा। रक्खा उसकी आत्मीयता और उसकी सरलता से असहज होने लगा। ढेर सारी बातें करके और लोगों को आशीष और दुआएं देकर गनी मियां अपने वतन लौट गया। रक्खा उस मलबेनुमा मकान पर अपना अधिकार समझता था। उसमें किसी को गाय-भैंस भी बांधने नहीं देता था किन्तु आज एक कुत्ता उसी मलबे पर लेटा हुआ रक्खा पर ही भौंकने लगा और उसे वहाँ से भगाकर मलबे पर इस तरह जाकर जोर-जोर से गुर्राने लगा मानो वही उसका असली अधिकारी है।